वर्ष 7, अंक 5

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

दिसंबर 2023 ₹ 65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी

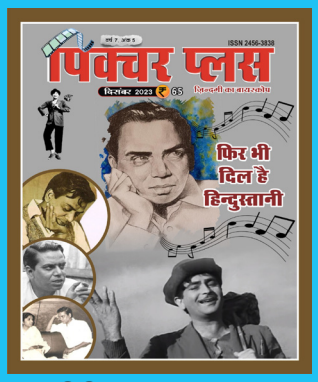

ISSN 2456 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस

वर्ष-7, अंक-5, दिसंबर, 2023
मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

कवर स्केच : कहकशां
(शैलेन्द्र के सभी चित्र: दिनेश शैलेन्द्र के फेसबुक से साभार)

लेआउट डिजाइन
शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, तीसरी मंज़िल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल (www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - 9313677771
Email: pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति, राजनीतिक विचारधारा तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(चित्र इंटरनेट से साभार व सभी पद अवैतनिक)

अनुक्रम

05. संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : मौसम बीता जाये...!
06. अरविंद कुमार : 'माधुरी' के वे दिन- राज कपूर देह थे तो शैलेन्द्र उनकी आत्मा (प्रस्तुति: संजीव श्रीवास्तव)
शैलेन्द्र शती संवाद:
10. मनोज शैलेन्द्र- जीना इसी का नाम है...
'बाबा के गीत गुनगुनाते बड़ा हुआ...'
11. अमला शैलेन्द्र मजूमदार से संजीव श्रीवास्तव की बातचीत
'कठिन वक्त में बाबा के गीत ताकत देते हैं'
14. दिनेश शैलेन्द्र से दीप भट्ट की बातचीत: रुला के गया सपना उनका...
16. शरद दत्त- गीतकार: शैलेन्द्र ; संगीतकार: शंकर-जय किशन
18. जावेद अख्तर- क्यों नाचे सपेरा?
21. नरेश सक्सेना- बड़े कवि, बड़े इंसान, बड़े दिलवाला
23. अशोक चक्रधर- शैलेन्द्र का नाम सबसे पहले क्यों लिया?
25. प्रहलाद अग्रवाल/दिनेश चौधरी -दर्द के सुर में शैलेन्द्र के मीठे गीत
29. विजय पाडलकर- मेरा नाम राजू...एक कवि, एक नायक, छह गीत
35. डॉ. इंद्रजीत सिंह-आग, राग और सामाजिक रंग के कवि
39. प्रताप सिंह- धूप इतनी न उतरे कि फूल जल जाये
42. ताराचंद मकसाने- सीधी सी बात न मिर्च मसाला
44. अनुराधा ओस- काहे को तीसरी कसम बनाई...!
अदाकारी:
46. किशोर कुमार कौशल- दिलीप कुमार होने के मायने
49. अजय ब्रह्मात्मज : सिनेमाहौल-'तांडव' के बाद ओटीटी का तनाव
51. पुस्तक प्लस: जयनारायण प्रसाद- सत्यजित राय पर मुकम्मल किताब
52. विनोद तिवारी- फिल्म पत्रकारिता-10 : खीर, लस्सी और सिनेमा
55. Global Screen: The Palestinian Cause in Palestinian Cinema
58. गीतकार: शैलेन्द्र - जलता है पंजाब

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित।
संपादक - संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

आप का खत मिला

हर बार नया विषय साहस का काम

नवंबर का अंक पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। इस अंक में सिनेमा पर लिखे गए लेख वास्तव में सिनेमा के नए पहलू को उजागर करते हैं। कुछ ऐसी बात बताते हैं, जिसको हमने वैसे नहीं जाना था जैसा लेखक कह रहा होता है। पत्रिका की एक और अच्छी बात है कि ये आज के सिनेमा को विरासत के चश्मे से देखने की कोशिश करता है। संजीव जी को बधाई। ऐसी फिल्मी पत्रिका निकालना एक साहस का काम है। उस पर हर बार नए विषयों को समाहित करते समय ये ध्यान रखना कि उस विषय की सार्थकता भी बनी रहे और वो नीरस भी ना लगे। इस अंक के सभी लेखकों को मेरी बधाई। अगले अंक का इंतजार रहेगा।

-गौतम सिद्धार्थ,लखनऊ

सब लिखें और आर्थिक सहयोग करें

हिंदी सिनेमा के गंभीर पाठकों के लिए जो भी जानकारी उपलब्धि होती है वह अखबार में या कतिपय व्यावसायिक पत्रिकाओं के गॉसिप के गलियारों से भरी होती थी। आज भी ऐसा ही हो रहा है। गंभीर पाठक तथा गंभीर पाठक-दर्शक की मनोनुकूल सामग्री मिलना 'माधुरी' के जमाने में सरल रहा होगा, किन्तु आज तो यह बड़ा कठिन लग रहा है। फिर भी एक शख्स पिछले आधे दशक से ज्यादा से गंभीर सामग्री देने की ठानकर एक अच्छी पत्रिका निकलने का प्रयास कर रहा है, वह है- संजीव श्रीवास्तव। और इनकी पत्रिका है- पिक्चर प्लस। साथियो, इस पत्रिका में हर रंग की सामग्री होती है। और हर अंक किसी ख़ास विषय पर केंद्रित आता है। यह मैं इसलिए नहीं लिख रहा हूं कि उन्होंने मेरे द्वारा प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रत' की पटकथा प्रकाशित की है, वह तो किया ही है, बल्कि मेरे अग्रज की भूमिका में जाहे प्रसिद्ध पटकथा लेखक, अब स्वर्गीय संजय चौहान की शब्दावली में कहूं तो जैसे कोई भी लेखक एकाध पेग लेने के बाद निसंकोच कहता है कि उसकी मंशा क्या है तो अपनी मंशा सिर्फ ये है कि कोई एक पाठक या लेखक इस पत्रिका को धन से योगदान देना चाहता है या गंभीर लेखन भी करना चाहते हों वे संपर्क करें। अपेक्षा करता हूं कि इस पत्रिका को केवल पढ़ने के लिए ही नहीं खरीदा जाये बल्कि इसकी सामग्री को जन संचार के दौर में शोध कार्य के लिए भी उपयोग में लिया जाए।

-चरण सिंह अमी, इंदौर

लाजवाब संपादकीय लिखते हैं आप

कमाल की पत्रिका निकाल रहे हैं आप। हर अंक अलग-अलग कहानी के साथ आ रहा है। नयापन डालने का आपका यह प्रयास बहुत ही सराहनीय है। हर अंक का संपादकीय बहुत ही चाव से पढ़ता हूं। मुझे बहुत पसंद आ रहा है। नवंबर का संपादकीय खुशियां बाय वन, गेट वन एक बार फिर काफी प्रशंसनीय बन पड़ा है। इसी तरह अच्छे अच्छे अंक निकालते रहें। सार्थक प्रयास करते रहें। हमारी शुभकामनाएं। सिनेमा के प्रेमियों और शोधार्थियों को यह पत्रिका जरूर पढ़नी चाहिए।

-चंद्र प्रकाश माथुर, जयपुर

हर बार नया एंगल देकर पत्रिका आगे बढ़ रही है

फिल्मी लेखों में सारे तथ्य पूर्वविदित होते हैं। बस उनकी प्रस्तुति में अनुठापन उन्हें पठनीय बनाते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कि ज्यादातर फिल्मों की कहानी एक जैसी होती है लेकिन उन्हें प्रस्तुत करने का अंदाज यानी कि नया एंगल उन्हें दर्शनीय बना देता है। इसी ध्येय को लेकर पिक्चर प्लस आगे बढ़ रही है।

-अशोक जोशी, इंदौर

सिनेमा की अनिवार्य पत्रिका

संजीव श्रीवास्तव के संपादन में प्रकाशित 'पिक्चर प्लस' सिनेमा की एक संतुलित और गंभीर पत्रिका है। 'माधुरी' पत्रिका के बंद होने के बाद सिनेमा के क्षेत्र में एक गंभीर और संतुलित पत्रिका की जरूरत महसूस की जा रही थी। इस अभाव को भरने की एक सार्थक कोशिश इस पत्रिका के माध्यम से की जा रही है।

-ऋषिकश, नोएडा

मौसम बीता जाये...!

दिसंबर के पहले हफ्ते में एनिमल का कहर टूट पड़ा। बॉक्स ऑफिस इंसानी दरिंगदी का एनिमल प्लानेट बन गया। गदर 2 में हमने सन्नी देओल की सुनामी देखी थी, अब रणबीर कपूर-बॉबी देओल का ऐसा खूनी खेल देखा मानो वाइल्ड लाइफ चैनल पर दो जंगली जानवर एक-दूसरे को नोंच कर खा-चबा जाने पर उतारू हैं। रणबीर कपूर तेज धार चाकू से बॉबी देओल का गला कुछ उसी तरह रेत देते हैं जैसे चिकन शॉप पर बकरा या मुर्गा हलाल किया जाता है और ग्राहक गोश्त खरीदने के लिए लाइन लगाये खड़े हैं। यकीन मानिए जब बॉबी देओल के हलाल का सीन चल रहा था तब सिनेमा हॉल में हम दर्शक भी ग्राहक बनकर बैठे थे। मुकद्दर का सिकंदर फिल्म के आखिरी दृश्यों को याद कीजिए- अमिताभ बच्चन और अमज़द खान एक-दूसरे के पेट में हथियार भोंककर लहूलुहान हो जाते हैं। दोनों की लड़ाई देख शहर में दहशत फैल जाती है। बाजार बंद कर दिया जाता है। वह सन् 1978 का दौर था, यह सन् 2023 का समय है। अतार्किंत नहीं बल्कि एक्स्ट्राऑर्डिनरी वॉयलेंस पेश करने की शुरुआत इससे भी पहले ज़ंजीर, दीवार और शोले से हो गई थी; वह घातक, घायल, डर, दीवानगी होता हुआ गदर और एनिमल एरा तक पहुंच गया है। यह हिंदी सिनेमा का मौसम है जो तेजी से बदल रहा है। हर दशक की हिंसा पिछले दौर की हिंसा से एक्स्ट्राऑर्डिनरी हो जाना चाहती है। ये एक्स फैक्टर का ज़माना है। एक्स्ट्रा और समथिंग डिफ्रेंरेट के बिना हमारी सोच और कल्पना का बिजनेस हो ही नहीं सकता। इस धारणा को सबसे ज्यादा हमारे सिनेमावाले पुख्ता कर रहे हैं। प्रोडक्ट को नये पाउच में पैक करने से उसकी बिक्री जोरदार होगी- यह बात फिर से गदर 2 और एनिमल ने साबित कर दिया है।

हिंदी सिनेमा के इतिहास में इंसानी शक्ल में पशुता दिखाने की प्रवृति पहले भी खूब रही है, वह कभी जंगली बना, कभी जानवर तो कभी अमानुष, लेकिन आज का हीरो खूंखार एनिमल बन गया है। उसे पिता के प्यार की तड़प है। यह एक जज्बाती पक्ष है। फिल्ममेकर कहना कहना चाहता है पिता के स्नेह और देखरेख से दूर बच्चों का आशिक, आवारा, जुआरी, लोफर, मवाली बन जाना गुजरे जमाने की बात हो गई, आज अगर उन्हें घर-परिवार में माता-पिता का प्यार और दुलार नहीं मिला तो वे चाकू, बंदूक, रायफल चलाने वाले सनकी एनिमल बन सकते हैं। यह फिल्ममेकर की एक्स्ट्राऑर्डिनरी इमेजिन है और यही वजह है कि इस फिल्म में केवल हिंसा नहीं बल्कि रिलेशंस के इमोशन और उसके रिएक्शंस को भी पाशविकता के ढांचे से परे नहीं रखा गया है।

हिंदी अमर गीतकार और जनकवि शैलेन्द्र ने दशकों पहले लिखा था- धरती कहे पुकार के, बीज बिछा ले प्यार के, मौसम बीता जाये...! वास्तव में यह सिल्वर स्क्रीन ही नहीं बल्कि सोसायिटी के सेल्युलॉयड के वेदर के लिए भी एक अलार्म के समान था। मौसम तेजी से बीत रहा है। मौसम की घड़ी की सूई को भला कैसे किसी खूंटे से थाम कर रोका सकता है लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं कि हम प्यार के बीज बिछाना बंद कर दें। अगर ये बीज नहीं बिछाएं तो अगली फसल तैयार कैसे होगी? लहलहाती फसल है तभी तो जीवन सफल है। वरना चारों तरफ खून का प्यासा एनिमल है। यह ना भूलें कि सिनेमा ने हमेशा मोहब्बत करना और हमें मानवीय होना सिखाया है एनिमल होना कत्तई नहीं।

दोस्तो पिक्चर प्लस का यह अंक कवि, गीतकार शैलेन्द्र की शख्सियत और रचनाकर्म पर समथिंग एक्स्ट्रा कहने का प्रयास करता है। उनके संदेश के मर्म को फिर से याद दिलाना भर ही हमारा मकसद है। मोहब्बत और मानवीयता का संदेश ताकि हम अपने अंदर के एनिमल को खुद ही खत्म कर सकें। यह कैसा संयोग है कि दिसंबर में शैलेन्द्र की पुण्यतिथि और राजकपूर की जन्मतिथि होती है। शैलेन्द्र की जन्मशती के बाद अगले बरस राज कपूर की जन्मशती प्रारंभ होने वाली है। इसे कहते हैं युग युगांतर की जुगलबंदी जो हर दौर के मौसम में सदाबहार है।

इस अंक को तैयार करने में आदरणीय प्रहलाद अग्रवाल, मनमोहन चड्ढा, डॉ. इंद्रजीत सिंह, दीप भट्ट और अजय कुमार शर्मा आदि साथियों को रचनात्मक मार्गदर्शन मिला। आप सभी का आभार। अंक कैसा लगा, जरूर लिखिएगा। अब हम जुटते हैं अगले अंक की तैयारी में क्योंकि मौसम बीता जाये...।

आपका संपादक

-संजीव श्रीवास्तव